

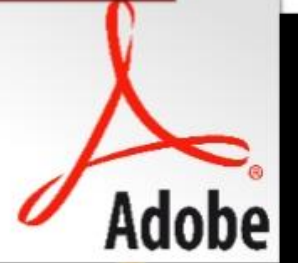
For : Rajasthan All Exam's

नया राजस्थान GK

(प्रमुख पठार, पहाड़ियां, पर्वत)

PDF

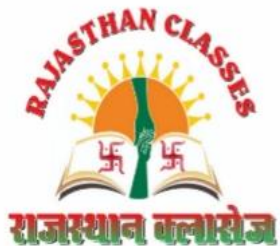
Free Download



नवीनतम राजस्थान GK (टॉपिक वाइज नोट्स)

Free PDF

Click Here



By - Aadarsh Sir



- ◆ गुरु शिखर : अरावली की पहाड़ियों में माउण्ट आबू (सिरौही) में स्थित राजस्थान की सबसे ऊँची पर्वत चोटी। कर्नल टॉड ने इसे संतों का शिखर कहा है।
- ◆ सेर (सिरौही) : 1597 मीटर ऊँची राज्य की दूसरी सबसे ऊँची चोटी एवं दिलवाड़ा (1442 मी.) : राज्य की तीसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी।
- ◆ जरगा (उदयपुर) : 1431 मीटर ऊँची राज्य की चौथी सबसे ऊँची चोटी, जो भोरट के पठार में स्थित है।
- ◆ मेसा पठार (620 मीटर ऊँचा) पर चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित है।
- ◆ अचलगढ़ (सिरौही) : 1380 मीटर ऊँची पर्वत श्रेणी।
रघुनाथगढ़ (सीकर)-1055 मी., खौ-920 मी., तारागढ़-873 मी. (मा.शि.बोर्ड की पुस्तक में 870 मी.)।
- ◆ मुकुन्दवाड़ा की पहाड़ियाँ: कोटा व झालरापाटन (झालावाड़) के बीच स्थित इस भू-भाग का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है।

- ◆ **मालखेत की पहाड़ियाँ :** सीकर जिले की पहाड़ियों का स्थानीय नाम। हर्ष की पहाड़ियाँ सीकर जिले में स्थित हैं, जिस पर जीणमाता का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है।
- ◆ **सुण्डा (सुन्धा) पर्वत :** भीनमाल (जालौर) के निकट स्थित पहाड़ियाँ, जिनमें सुण्डा (सुन्धा) माता का मंदिर स्थित है। इस पर्वत पर 2006 में राज्य का पहला रोप वे संचालित है।
- ◆ **मालाणी पर्वत श्रृंखला :** लूनी बेसिन का मध्यवर्ती घाटी भाग, जो मुख्यतः जालौर एवं बालोतरा के मध्य स्थित है।
- ◆ **उड़िया पठार :** राज्य का सबसे ऊँचा पठार, जो गुरु शिखर से नीचे स्थित है। यह आबू पर्वत से 160 मीटर ऊँचा है।
- ◆ **आबू पर्वत :** आबू पर्वत खंड का दूसरा सबसे ऊँचा पठार (उड़िया पठार के बाद), जिसकी औसत ऊँचाई 1200 से अधिक मीटर है। यहीं पर टॉड रॉक एवं हार्न रॉक स्थित है।
- ◆ **भोरठ का पठार:** आबू पर्वत खंड के बाद राज्य का उच्चतम पठार, जो उदयपुर के उत्तर पश्चिम में गोगुन्दा व कुम्भलगढ़ के बीच स्थित है। इसकी औसत ऊँचाई 1225 मी. है।
- ◆ **भाकर :** पूर्वी सिरोही क्षेत्र में अरावली की तीव्र ढाल वाली व ऊबड़-खाबड़ कटक (पहाड़ियाँ) स्थानीय भाषा में 'भाकर' नाम से जानी जाती है।

- ◆ राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 9 की पुस्तक 'राजस्थान अध्ययन' के अनुसार राज्य की 6 सबसे ऊँची पर्वत चोटियाँ हैं- 1. गुरु शिखर (1722 मी.), 2. सेर (1597 मी.), 3. दिलवाड़ा (1442 मी.), 4. जरगा (1431 मी.), 5. अचलगढ़ (1380 मी.) एवं 6. आबू (1295 मी.) ।
- ◆ अन्य चोटियाँ : कुंभलगढ़ (1224 मी.) कमलनाथ की पहाड़ी (1001 मी.), ऋषीकेश (1017 मी.), सज्जनगढ़ (938 मी.) एवं लीलागढ़ (874 मी.) ।
- ◆ गिरवा: उदयपुर क्षेत्र में तश्तरीनुमा आकृति वाले पहाड़ों की मेखला (शृंखला) को स्थानीय भाषा में 'गिरवा' कहते हैं ।
- ◆ मेरवाड़ा की पहाड़ियाँ : अरावली पर्वत श्रेणियों का टाडगढ़ के समीप का भाग, जो मारवाड़ के मैदान को मेवाड़ के उच्च पठार से अलग करता है ।
- ◆ छप्पन की पहाड़ियाँ व नाकोड़ा पर्वत : बाड़मेर में सिवाणा पर्वत क्षेत्र में स्थित मुख्यतः गोलाकार पहाड़ियाँ । इन्हें 'नाकोड़ा पर्वत' के नाम से भी जाना जाता है ।
- ◆ लसाड़िया का पठार : उदयपुर (अब सलूंबर जिले) में जयसमंद से आगे पूर्व की ओर विच्छेदित व कटाफटा पठार ।
- ◆ त्रिकूट पहाड़ी : जैसलमेर किला इसी पर स्थित है ।

- ◆ **उपरमाल** : चित्तौड़गढ़ के भैंसरोड़गढ़ से भीलवाड़ा के बिजोलिया तक का पठारी भाग रियासत काल में 'उपरमाल' के नाम से जाना जाता था।
- ◆ **चिडियाटूँक पहाड़ी** पर जोधपुर का मेहरानगढ़ किला है।
- ◆ **तारागढ़** (अजमेर), **नाग पहाड़** (अजमेर) मध्य अरावली की सबसे ऊँची चोटी है। **ब्यावर** जिले में **टाडगढ़** (गोरमजी/मायरजी) 933 गज।
- ◆ **आडावाला पर्वत** : बूँदी जिले में स्थित है।
- ◆ **भैराच एवं उदयनाथ** : अलवर में स्थित पहाड़ियाँ।
- ◆ **मगरा** : उदयपुर का उत्तर पश्चिमी पर्वतीय भाग। यहीं **जरगा पर्वत** चोटी स्थित है।
- ◆ **खो जयपुर जिले में व बाबाई (झुँझुनूँ)** में स्थित पहाड़ियाँ।
- ◆ **डोरा पर्वत** (869 मी.): जसवंतपुरा पर्वतीय क्षेत्र जालौर में स्थित।
- ◆ **रोजाभाखर** (730 मी.), **इसराना भाखर** (839 मी.) एवं **झारोला पहाड़** : ये सभी जालौर पर्वतीय क्षेत्र (जसवंतपुरा की पहाड़ियाँ) में स्थित हैं।
- ◆ **नाल**: अरावली श्रेणियों के मध्य मेवाड़ क्षेत्र में स्थित **तंगरास्तों** (**दरों**) को स्थानीय भाषा में नाल कहते हैं।

◆ मेवाड़ में प्रमुख नालें -

(1) जीलवा की नाल (पगल्या नाल) : यह मरवाड़ से मेवाड़ में आने का रास्ता प्रदान करती है।

(2) सोमेश्वर की नाल : देसूरी से कुछ मील उत्तर में स्थित विकट तंग दर्रा।

(3) हाथी गुड़ा की नाल : देसूरी से दक्षिण में 5 मील दूरी पर स्थित नाल। कुंभलगढ़ का किला इसी नाल के नजदीक है।

◆ ब्यावर जिले में अरावली के 4 दर्रे- (1) बर का दर्रा, (2) परवेरिया का दर्रा, (3) शिवपुर घाट का दर्रा, (4) सूरु घाट दर्रा हैं।

◆ जसवन्तपुरा की पहाड़ियाँ : आबू क्षेत्र के पश्चिम में जालौर तक स्थित पहाड़ियाँ। डोरा पर्वत चोटी यहीं स्थित है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य:

◆ पश्चिमी शुष्क रेतीला मैदान पाकिस्तान सीमा के सहारे-सहारे कच्छ की खाड़ी से पंजाब तक विस्तृत है। यह मरुस्थल विश्व का एक मात्र मरुस्थल है जो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाओं के द्वारा निर्मित है।

◆ खादर : चंबल बेसिन में 5 से 30 मीटर गहरी खड्ड युक्त बीहड़ भूमि को स्थानीय भाषा में 'खादर' कहते हैं।

- ◆ **धोरे** : रेगिस्तान में रेत के बड़े-बड़े टीले, जिनकी आकृति लहरदार होती है।
- ◆ **बरखान** : रेगिस्तान में रेत के अर्द्धचन्द्राकार बड़े-बड़े टीले। ये एक स्थान से दूसरे स्थान पर गतिशील रहते हैं।
- ◆ **लघु मरुस्थल** : महान थार मरुस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ से बीकानेर तक फैला है।
- ◆ **बीहड़ भूमि या कंदराएँ** : चम्बल नदी के द्वारा मिट्टी के भारी कटाव के कारण प्रवाह क्षेत्र में बन गई गहरी घाटियाँ व टीले। राजस्थान में सर्वाधिक बीहड़ भूमि धौलपुर जिले में है। राजस्थान व मध्यप्रदेश के सीमावर्ती जिले भिण्ड, मुरैना, धौलपुर आदि में ये कंदराएँ (Ravines) बहुत हैं।
- ◆ **खड़ीन** : जैसलमेर के उत्तर दिशा में बड़ी संख्या में स्थित प्लाया झीलें, जो प्रायः निम्न कागारों से घिरी रहती हैं।
- ◆ **धरियन** : जैसलमेर जिले के ऐसे भू-भाग में, जहाँ आबादी लगभग नगण्य है, स्थानान्तरित बालूका स्तूपों को स्थानीय भाषा में धरियन नाम से पुकारते हैं।
- ◆ **वागड़ (वाग्वर)** : बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ व डूंगरपुर के क्षेत्र को स्थानीय भाषा में वागड़ (वाग्वर) कहते हैं।

◆ **बांगड़ (बांगर)** : यह अरावली पर्वत एवं पश्चिम मरुस्थल के मध्य का भाग है, जो मुख्यतः झुंझुनूँ, सीकर, नागौर व डीडवाना-कुचामन जिलों में विस्तृत है।

◆ **छप्पन के मैदान** : बाँसवाड़ा, डूंगरपुर व प्रतापगढ़ के बीच

माही बेसिन में 56 ग्राम समूहों (56 नदी नालों का प्रवाह क्षेत्र) का क्षेत्र।

◆ **पीडमान्ट मैदान** : अरावली श्रेणी में देवगढ़ के समीप स्थित पृथक निर्जन पहाड़ियाँ जिनके उच्च भू-भाग टीलेनुमा है।

◆ **बीजासण का पहाड़** : मांडलगढ़ के कस्बे के पास स्थित है।

◆ **विन्ध्याचल पर्वत** : राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में मध्यप्रदेश में स्थित है।

◆ **लाठी सीरीज क्षेत्र** : जैसलमेर में पोकरण से मोहनगढ़ तक पाकिस्तानी सीमा के सहारे विस्तृत एक भूगर्भीय जल की चौड़ी पट्टी जहाँ उपयोगी सेवण घास पाई जाती है।

◆ **कूबड़ पट्टी** : राजस्थान के नागौर, डीडवाना-कुचामन एवं

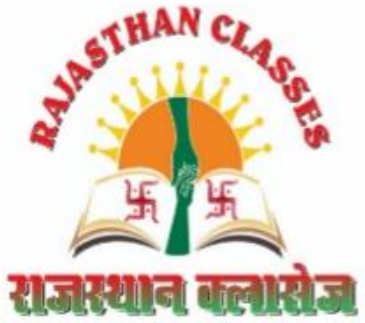
अजमेर जिले के कुछ क्षेत्रों में भूगर्भीय पानी में फ्लोराइड की मात्रा अत्यधिक होने के कारण वहाँ के निवासियों की हड्डियों में टेढ़ापन आ जाता है एवं पीठ झुक जाती है इसलिए इसे कूबड़ पट्टी कहते हैं।

- ◆ **ढाँढ या थली** : बरखान बालुकास्तूपों की दोनों भुजाओं के बीच वायु की रगड़ से बने गर्त को स्थानीय भाषा में थली कहते हैं। इसमें वर्षा पानी भरने से प्लाया झील का निर्माण हो जाता है।
- ◆ **बग्गी या काठी** : घग्घर मैदान में पाई जाने वाली समतल व उपजाऊ चिकनी मिट्टी का स्थानीय भाषा में नाम।
- ◆ सांभर झील आंतरिक जल प्रवाह का श्रेष्ठ उदाहरण है।

नवीनतम राजस्थान GK (टॉपिक वाइज नोट्स)

Free PDF

[Click Here](#)



By - Aadarsh Sir





Click Here



लाइव क्लासेज यहां से देखें

Click Here



अन्य नोट्स PDF हेतु क्लिक करें

Click Here



हर नोट्स, मॉडल पेपर की लिंक यहां मिलेगी

Click Here